बाल साहित्य में समावेशन की सम्भावनाओं की खोज

उषा मुकुन्दा

"बचपन में एक क्षण ऐसा होता है जब एक द्वार खुलता है और भविष्य भीतर प्रवेश करता है।" - ग्राहम ग्रीन

बाल साहित्य में समावेशन : क्या यह एक आसान बात है?

पढ़ने के लाभ और उपयोगों के बारे में जितनी भी बात की जाए कम है। इसलिए यह जरूरी है कि हर प्रकार की रुचि और क्षमता रखने वाले **सारे** बच्चों को पढ़ने की सामग्री उपलब्ध हो। लेकिन सिर्फ उपलब्धता काफी नहीं है। अच्छी विषय–सामग्री वाली पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए और उनकी उपलब्धि सुनिश्चित कराने वाले सुगमकर्ता होने चाहिए जो बच्चों को ऐसे अवसर मुहैया कराएँ जहाँ वे पुस्तकों के बारे में अपने विचार और अवलोकनों की चर्चा कर सकें।

समावेशन बराबरी का होना चाहिए। समावेशन का मतलब कमतर का बड़े के साथ समावेशन नहीं बल्कि इसका मतलब है समान रूप से बराबर होना। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि सारे बच्चे पढ़ें और एक–दूसरे के जीवन, स्थितियों और विशेषताओं के बारे में जानें।

जब बच्चा कोई पुस्तक पढ़ता है तो वह कई तरह से उससे जुड़ता है। उसे पुस्तक की विषयवस्तु अच्छी लगती है, उसका कथानक अच्छा लगता है, वह किसी पात्र के साथ गहरा तादात्म्य स्थापित कर लेता है, पुस्तक के चित्र उसके दिल को छू लेते हैं और पुस्तक की भाषा उसके ही विचारों को प्रतिबिम्बित करती सी प्रतीत होती है। बहुत सम्भव है कि जब तक बच्चा पूरी पुस्तक पढ़े तब तक उसके मन में अवचेतन रूप से चिन्तन की प्रक्रिया भी शुरू हो जाए।

मैंने शहरी और ग्रामीण दोनों पृष्ठभूमियों वाले बच्चों के साथ काम किया है और मेरा अनुभव यह है कि कि कुछ सामान्य प्रीतिपात्र होते हैं जो समान रूप से अच्छे लगते हैं। "बसवा और जादुई बिन्दु" एक ग्रामीण लड़के की कहानी है जो जंगल के बाहर अपनी माँ के साथ रहता है। उनका जीवन सरल और सादा है। इस पुस्तक को जब शहरी समाज में रहने वाला लड़का पढ़ता है तो वह तुरन्त बसवा के साथ एक गहरा रिश्ता महसूस करने लगता है। उसे यह कहानी और किरदार दोनों ही अच्छे लगते हैं। इस प्रकार यहाँ कोई सीमा या बन्धन नहीं है।

ग्रामीण पृष्ठभूमि वाला एक अन्य बच्चा "सुरांगिनी" शीर्षक कहानी को बार–बार पढ़ता है और मुझे बताता है कि उसे कहानी के सुन्दर चित्र और डिजाइन बहुत पसन्द हैं अर्थात उसे भी ये चीजें उतनी ही पसन्द आती हैं जितनी किसी बिल्कुल अलग परिवेश वाले के बच्चे को आतीं। "चुस्किट स्कूल जाती है"–एक ऐसी बच्ची की कहानी है जो लद्दाख में रहती है, वह चल–फिर नहीं सकती और इसलिए व्हील चेयर का प्रयोग करती है। वह हँसमुख है और उसके कई दोस्त भी हैं। उसे सिर्फ इस बात का अफसोस है कि वह उनके साथ स्कूल नहीं जा पाती। वह इलाका उसकी व्हील चेयर के अनुकूल नहीं है। यह कहानी असाधारण इसलिए हो जाती है क्योंकि इस समस्या को बच्चे ही हल करते हैं। पाठक उस स्थान की प्राकृतिक सुन्दरता से अभिभूत होता है और चुस्किट की असमर्थता उसे भाव–विह्वल नहीं करती। मैंने यह कहानी असमर्थ बच्चों के स्कूल में भी सुनाई जहाँ मैं महीने में एक बार जाती हूँ। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस कहानी के लिए भी उनकी प्रतिक्रिया वैसी ही थी जैसी किसी अन्य अच्छी कहानी के लिए होती थी। उन्हें यह पुस्तक बहुत अच्छी लगी लेकिन चुस्किट के साथ उनका कोई खास तादात्म्य देखने में नहीं आया।

श्रद्धांजलि स्कूल में एक बच्चा दूसरे को पढ़ने में सहायता कर रहा है।

कौसानी के पुस्तकालय में बच्चे अपनी पसन्द की पुस्तकों के साथ

तो क्या हम ऐसा कह सकते हैं कि पाठकों के परिचित वातावरण और लोगों की तुलना में कहानियाँ, सशक्त तरीके से तराशे गए किरदार और कल्पनात्मक चित्र अधिक महत्त्वपूर्ण हैं? ऐसे कई उदाहरण हैं कि जब कोई पुस्तक अच्छी तरह से लिखी जाती है तो वह सारे बन्धन व अवरोध तोड़ देती है और विविध पृष्ठभूमि के बच्चे उस पुस्तक की सराहना करने के साथ–साथ उसका आनन्द भी ले पाते हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि बाल साहित्य के लेखकों और चित्रकारों को इस बारे में अधिक संवेदनशील और जागरूक होना चाहिए कि पुस्तकें ऐसी हों कि जिनके साथ हर तरह के पाठक जुड़ सकें। लेकिन इस लक्ष्य को लेकर चलने वाली पुस्तक तो शुरू में ही मुसीबत में पड़ जाती है! लेखक और कलाकारों को रचनात्मक स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे खुद को सच लगने वाली बातें पेश कर सकें। कथ्य सच्चा और प्रामाणिक हो तो हर पाठक उसके साथ जुड़ेगा।

क्या भारत के बाल साहित्य में समावेशी विषयों की पुस्तकें हैं?

अन्वेषी रिसर्च सेण्टर फॉर विमेन्स स्टडीज, हैदराबाद द्वारा पेश की गई शृंखला में हमें ऐसी एक सम्भावना नजर आती है। ये विषयवस्तुएँ/थीम उन हालातों को उजागर करती हैं जिनसे हम अधिक परिचित नहीं हैं। ये सशक्त कहानियाँ जरा–सा विचलित करती हैं, मार्मिक हैं और अनेक सवाल उठाती हैं।

अगर ये कहानियाँ भावुकता की दृष्टि से इतनी गहन न होतीं तो अच्छा होता क्योंकि बच्चे इनके साथ एकदम–से जुड़ नहीं पाते हैं। बच्चों की पुस्तकों की एक महत्त्वपूर्ण कसौटी यह है कि कहानी ''बहुत अच्छी'' होनी चाहिए। लेकिन उपर्युक्त "अलग–सी या हट के" कहानियाँ समझने के लिए किसी वयस्क की जरूरत पड़ सकती है लेकिन फिर भी वे रास्ता तो दिखाती ही हैं।

बाल साहित्य में समकारी तत्व कौन–से हैं?

1.भाषा की बहुलता आवश्यक है।

भारत के राज्यों में कई भाषाओं की खनक सुनाई देती है। ऐसे में एकलव्य का यह प्रयास सराहनीय है कि उन्होंने न केवल मुख्यधारा की भाषाओं जैसे हिन्दी, बंगाली, मराठी, गुजराती, उर्दू और छत्तीसगढ़ी में बल्कि मालवी (मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा), बुंदेलखण्डी (मध्य प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा), गोण्डी, कोर्कू (मध्य प्रदेश की घनी आबादी वाले लोगों की आदिवासी भाषाएँ) और हाल ही में कुंक्ना (दक्षिण गुजरात में बोली जाने वाली आदिवासी भाषाएँ) में भी पुस्तकों के प्रकाशन का साहसिक कदम उठाया है। प्रथम और तूलिका जैसे प्रकाशक भी कई भाषाओं में पुस्तकें छापते हैं। उनकी द्विभाषिक पुस्तकें समावेशन की भावना को प्रोत्साहित करती हैं। ज्योत्स्ना प्रकाशन मराठी पाठकों के लिए अच्छा और प्रभावपूर्ण कार्य कर रहा है। कई राज्यों में क्षेत्रीय प्रकाशक हैं तो सही, लेकिन उनकी गुणवत्ता एक समान नहीं है। राज्य सरकारों को चाहिए कि वे इस स्थिति पर ध्यान दें और प्रकाशकों को समर्थन प्रदान करें।

2. वातावरण, किरदार और चित्रकला की बहुलता

देश भर के लेखकों और चित्रकारों के कारण यह कार्य क्रमशः आगे बढ़ रहा है। ये लोग अपने बचपन की यादें ताजा करने वाली परिस्थिति, किरदार और कला रूपों को दर्शा रहे हैं और इसलिए पुस्तकें सच्ची लगती हैं। एन.बी.टी. द्वारा प्रकाशित महाश्वेता देवी की 'द व्हाइ–व्हाइ गर्ल", इस बात का अनूठा उदाहरण है।

एक तिब्बती लड़की 'द व्हाइ व्हाइ गर्ल'
पढ़ती हुई, पूंठा साहिब हिमाचल प्रदेश में

3. विभिन्न समुदायों और उनकी संस्कृतियों को समकालीन बनाइए। उन्हें संग्रहालय की वस्तु मत मानिए।

कई बार समावेशी साहित्य " अमुक लोककथाओं" या " अमुक प्राचीन किंवदन्तियों" का पर्याय लगता है। इनमें उस वक्त और युग का गुणगान किया जाता है। यदि कहानियों को समकालीन परिस्थितियों में रखा जाए तो वे समावेशन के लिए अधिक सार्थक हो सकती हैं। "एस्किमो बॉय" शीर्षक वाली एक पुस्तक बहुत बढ़िया है, जिसमें दर्शाया गया परिवार, कुछ विशेष बातों को छोड़कर, किसी अन्य सामान्य परिवार जैसा ही है और हाँ, इसमें इग्लू में रहने या मछली पकड़ने के लिए बर्फ में छेद करने की बात नहीं है!

4. घिसी–पिटी बातों के बिना भी गर्व की भावना पैदा की जा सकती है

बच्चे अपनी संस्कृति या लिंग से सम्बन्धित कहानियों के साथ तब जुड़ सकते हैं जब गर्व की भावना पैदा की जाए। "हू विल बी निंग्तो" शीर्षक कहानी में मणिपुर के राजा की सबसे छोटी लड़की को सर्वाधिक योग्य उत्तराधिकारी के रूप में चुना जाता है। "मालू और भालू" में हम एक माँ और बेटी की बहादुरी और साहस की प्रशंसा करते हैं। "काली और पनियाँ साँप" में लड़के के साँप पकड़ने के कौशल से कोई इनकार नहीं कर सकता, हालाँकि इसमें जरा रूढ़िवादिता है। इन पुस्तकों को तूलिका प्रकाशन ने प्रकाशित किया।

ए एण्ड ए प्रकाशन ने बालिकाओं के लिए समर्पित शृंखला छापकर एक अच्छा कदम उठाया है। एन.बी.टी. का "एटोआ मुण्डा वन द बैटल" एक ऐसे आदिवासी लड़के की प्रेरणादायक कहानी है जो शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक बाधाओं से लड़ता है।

5. कथ्य को हल्का–फुल्का या सरल रखना

बच्चे ऐसी कहानी पसन्द करते हैं जो मजेदार हो। इसलिए अगर विषय प्रासंगिक भी हों तो उसकी प्रस्तुति सरल होनी चाहिए। यही कारण है कि तूलिका प्रकाशन की "जू'स स्टोरी" और "अण्डर द नीम ट्री" इतनी सफल हैं। ये कहानियाँ गम्भीर मुद्दे उठाती हैं लेकिन कहानियों में जो बच्चे हैं, वे उन्हें बहुत सरल रूप में लेते हैं। एकलव्य की "आई एम अ कैट" भी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें एक लड़की घर के कामों से बचने के लिए माँ को बहकाने की कई कोशिशें करती है। वर्णन और पानी के रंग वाले उत्तम चित्रों के माध्यम से पाठक उनकी आर्थिक स्थिति का अनुमान लगा सकते हैं, उनके घर की टीन की छत, कम सामान और फटे व पैबन्द लगे कपड़े देख सकते हैं। लेकिन लेखक या किरदार कहीं भी आपसे सहानुभूति की माँग नहीं करते। पूरी कहानी बड़ी मजेदार है और हर बच्चा इसके साथ जुड़ सकता है और जुड़ता भी है।

उत्तराखण्ड के ग्रामीण स्कूल शीतला में बच्चों की बनाई किताब का विमोचन

6. विभिन्न विषय या थीमें

अब तक लेखक और प्रकाशकों ने अपेक्षाकृत ''सुरक्षित विषयों" पर ही लिखा है। इसमें कोई शक नहीं कि तारा

कौसनी, उत्तराखण्ड में एक नन्हा पाठक

प्रकाशन की "पोन्नी द फ्लॉवर सेलर" और "बाबू द होटल वेटर" एक अच्छी शुरुआत हैं, लेकिन "अ डे इन द लाइफ ऑफ लक्ष्मी द हिजड़ा या किसी असमर्थ बच्चे" से सम्बन्धित विषय के बारे में क्या कहा जाए? अन्वेषी ने "द सैक क्लॉथमैन" में एक कठिन विषय लिया है, जिसमें किसी पारिवारिक त्रासदी के सदमे से गुजर रही एक लड़की मानसिक रूप से विचलित वयस्क से मिलती है। इसमें यह सवाल उठाया गया है कि अगर ऐसी ही स्थिति हमारे सामने आती तो हम क्या करते। "अनटोल्ड स्कूल स्टोरीज" में एक निम्न जाति की लड़की को उसके शिक्षक और सहपाठियों द्वारा सताए जाने और दण्डित करने की बात है।

7. कुछ बातें अनकही छोड़ दें, ताकि नन्हें पाठक उस बारे में सोचें, दूसरों के साथ संवाद करें और अपनी समझ बनाएँ

इस बात का अच्छा उदाहरण है "भीमायन" जो एक ग्राफिक उपन्यास है। बी. आर. अम्बेडकर की सच्ची कहानी को कल्पनाशील चित्रों के साथ लिखा गया है। दूसरा उदाहरण है "मुकुन्द एण्ड रियाज" जो विभाजन के समय में दो मित्रों की कहानी है। इसमें मुद्दे जटिल हैं लेकिन सब कुछ स्पष्ट रूप से बताने की जरूरत नहीं। बच्चे को यह महसूस करना चाहिए कि अभी कुछ और सामने आने वाला है। ऐसा ही एक अन्य उदाहरण है "द अनबॉय बॉय"।

8. ऐसी कहानी और कथानक जो "अलगपन" को मुख्य कथानक में गूँथता चले

टैगोर की "काबुलीवाला" एक ऐसी ही कहानी है। एक "अजनबी" के आने से पिता और बेटी के मजबूत व गहरे सम्बन्ध में अशान्ति उत्पन्न हो जाती है।

9. उपलब्धता और खरीदने में आसानी

एन.बी.टी. और प्रथम पुस्तकों ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी पुस्तकों का मूल्य कम है और वे दूर–दराज के स्थानों में जाकर पुस्तक मेले आयोजित करते हैं।

10. वास्तविकता सामने रखना (तथ्य को एक भारी भावनात्मक बोझ बनाए बिना ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना)

रूपा प्रकाशन द्वारा रस्किन बॉण्ड की "एंग्री रिवर" एक सरल और हृदय स्पर्शी कहानी है जिसमें यह बताया गया है कि एक उफनती हुई नदी एक बच्ची और उसके दादा–दादी को कैसे प्रभावित करती है।

11. कथेतर साहित्य

तारा प्रकाशन की "ट्रैश–ऑन रैग पिकर चिल्ड्रन एण्ड रीसाइक्लिंग" और तूलिका प्रकाशन की "सुरेश एण्ड द सी" ऐसे बच्चों की बात करती हैं जो एक निश्चित जीवन शैली से जुड़े हुए हैं। "व्हाइ आर यू अफ्रेड टु होल्ड माइ हैण्ड?" में एक असमर्थ बच्चा अपने 'समर्थ' साथियों से यह सवाल पूछता है। एकलव्य की "बेटी करे सवाल" में वे प्रश्न उठाए गए हैं जो लड़कियों के मन में अपने शरीर और शारीरिक परिवर्तनों के सम्बन्ध में पैदा होते हैं। "सम स्ट्रीट गेम्स ऑफ इण्डिया" एन.बी.टी. की एक मनोहर पुस्तक है जिसमें इस सम्भावना पर चर्चा की गई है कि हर प्रकार की पृष्ठभूमि वाले बच्चे इन सरल खेलों का आनन्द उठा सकते हैं।

12.बच्चों द्वारा मौखिक कहानियाँ लिखना और नई कहानियाँ रचना

हाल ही में दूर–दराज के स्थानों में सामुदायिक पुस्तकालयों में कार्यरत पुस्तकालय–शिक्षकों के लिए पुस्तकालय से सम्बन्धित कार्यों पर एक कोर्स का आयोजन हुआ, जिसमें एक प्रतिभागी ने बताया कि उनकी पहली प्राथमिकता थी उन बच्चों की भाषा सीखना जिनके

वरदनाहल्ली, कर्नाटक के ग्रामीण पुस्तकालय में नन्हें पाठक

साथ वे काम काम करती थीं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इसके बाद वे कहानियों का स्थानीय भाषा पारधी में अनुवाद करके अन्त में बच्चों से स्वयं अपनी कहानियाँ रचने को कहेंगी। महाराष्ट्र से आए एक अन्य समूह ने भी इस विचार के बारे में खोजबीन की। बच्चों की समावेशी पुस्तकों के लिए यह एक नया विचार है!

उल्लिखित प्रकाशकों के अलावा सेण्टर फॉर लर्निंग रिसोर्सस, पुणे और खेल किताब, दिल्ली, के प्रकाशनों में कुछ समावेशी विषय हैं। पराग पहल भी बाल साहित्य के प्रकाशकों को आर्थिक सहायता दे रही है लेकिन अभी भी इस प्रकार की सहायता की संख्या बहुत कम है और अभी यह बहुत दूर की बात है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समावेशी साहित्य बन्धनों को तोड़ने का एक तरीका हो सकता है। पर यह पता लगाना आवश्यक है कि बच्चे "खुद" से सम्बन्धित कहानियों से अधिक जुड़ते हैं या अच्छी तरह से सुनाई गई कहानियों से। अन्यथा हम एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में आ जाएँगे जहाँ पुस्तकें समावेशी होने की कोशिश तो करती हैं लेकिन बच्चों की गहरी संवेदनशीलता को छूने में असफल रहती हैं।

"जहाँ अज्ञान हमारा स्वामी होता है, वहाँ वास्तविक शान्ति की कोई सम्भावना नहीं होती।" . माननीय दलाई लामा

आभार : *मैं अपने मित्रों और सहयोगियों अरविन्द अनन्तरामन, आशा नेहेमैया, गायत्री तीर्थपुरा और यामिनी विजयन को धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने ईमेल के द्वारा इस विषय पर बातचीत करने के मेरे अनुरोध को स्वीकार किया। उनके इनपुटों के कारण यह लेख सही मायनों में समावेशी बना है!*

उषा मुकुन्दा के लिए पिछले 30 वर्षों से बच्चों और पुस्तकों के साथ अन्तःक्रिया करने की यात्रा बहुत सुखद और ज्ञान प्राप्ति की यात्रा रही है। इस यात्रा के दौरान उन्होंने बाल साहित्य में गहरी रुचि विकसित की। उन्हें अपने अनुभवों को बच्चों तथा वयस्कों के साथ साझा करना अच्छा लगता है। पिछले कुछ वर्षों से वे ग्रामीण पुस्तकालयों के साथ जुड़ी हुई हैं। उनसे usha.mukunda@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल